

एच.एफ.आर.आई. में आयोजित हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन पर 2 दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

जलवायु परिवर्तन से लुप्त हो गईं बहुत सी प्रजातियां : गुप्ता

शिमला, 3 अक्टूबर (तिलक): हिमालय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन विषय पर हिमालय वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी की ओर से वीरवार को 2 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ हिमाचल प्रदेश वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल आर.के. गुप्ता द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आर.के. गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन वर्तमान परिपेक्ष्य में एक प्रमुख मुद्दा है जिस पर विभिन्न मंचों पर विचार-मंथन किया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन का वानिकी पारिस्थितिकी तंत्र पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है तथा बहुत सी



शिमला : हिमालय वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित कार्यशाला के दौरान उपस्थित प्रतिभागी अधिकारी व (इनसेट में) उपस्थित मुख्यातिथि।

प्रजातियां लुप्त हो गई हैं।

इससे पहले हिमालय वन

अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा.

बी.आर.आर. सिंह ने कार्यशाला में

आए सभी गण्यमान्य अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों का स्वागत किया तथा

जलवायु परिवर्तन के चलते राजगढ़ में नहीं हो रहा सेब

कहा कि जलवायु परिवर्तन तथा इसका निवारण व समाधान एक ज्वलंत मुद्दा है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा विविध मंत्रालयों के अंतर्गत इसके संदर्भ में 8 अभियान शुरू किए गए हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि व बागवानी फसलों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अपने दृष्टिकोण को सुदृढ़ करते हुए उन्होंने 1980 के दशक में सिरमौर जिला के राजगढ़ क्षेत्र में सेब की शीघ्र तैयार होने वाली

प्रजाति का उदाहरण दिया लेकिन अब इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण सेब के पौधे होने के बावजूद फल नहीं लग रहे हैं।

इसी प्रकार जलवायु परिवर्तन हिमाचल प्रदेश के अन्य निचले क्षेत्रों में भी ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी है।

इस अवसर पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के उप महानिदेशक साईबल दास गुप्ता ने कहा कि परिषद सम्पूर्ण देश में वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान के लिए एक प्रमुख संस्थान है तथा हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला इसका एक क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान है।

परिषद द्वारा एक महत्वाकांक्षी परियोजना भू-उपयोग व पारिस्थितिकी प्रबंधन की बढ़ती की लिए नीतियां व संस्थागत सुधार (एस.एल.ई.एम.) चलाए जा रही हैं।

इस कार्यक्रम के समन्वयक एवं संस्थान के वरिष्ठतम वैज्ञानिक डा. के.एस. कपूर ने बताया कि इस कार्यशाला में भूतपूर्व प्रधान मुख्य अरण्यपाल आर.ए. सिंह, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के सहायक निदेशक डा. टी.पी. सिंह, आई.आई.एच.एस. के पूर्व निदेशक डा. वी.के. मट्टू, सी.एच.के.वी. पालमपुर के रणवीर सिंह राणा सहित अपने विचार रखेंगे।

दैनिक भास्कर

‘जलवायु परिवर्तन से वानिकी पर असर’

शिमला : जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि व बागवानी फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन, निवारण व समाधान मुद्दे पर वीरवार को हिमालय वन अनुसंधान संस्थान द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल आर.के. गुप्ता ने कहा कि जलवायु परिवर्तन पर विभिन्न मंचों पर मंथन किया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन का वानिकी पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है, इससे बहुत सी प्रजातियां लुप्त हो रही हैं। संस्थान के निदेशक डॉ. बी.आर. सिंह ने कहा कि 1980 के दशक में सिरमौर जिला के राजगढ़ क्षेत्र में सेब की शीघ्र तैयार होने वाली प्रजाति के पौधे रोपित किए थे परंतु अब इस क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण पौधों पर फल नहीं लग पा रहे हैं। इसी प्रकार जलवायु परिवर्तन से प्रदेश के अन्य निचले क्षेत्रों में ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी है। भारतीय अनुसंधान केंद्र शिक्षा परिषद देहरादून के उप महानिदेशक साईबल दास गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि परिषद सम्पूर्ण देश में वानिकी क्षेत्र में अनुसंधान के लिए एक प्रमुख संस्थान है तथा हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला इसका एक क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र है।

अमर उजाला

चंडीगढ़ | वीरवार | 3 अक्टूबर 2013

पंथाघाटी में आज देश भर से वैज्ञानिक जुटेंगे

शिमला। हिमाचल वन अनुसंधान केंद्र पंथाघाटी में वीरवार से राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला और ट्रेनिंगें शुरू हो रही हैं। इसका विषय ‘लगातार बदलते पर्यावरण के बदलाव को कैसे ग्रहण करना है’ रखा गया है। भविष्य में यह परिवर्तन मनुष्य को कहां तक प्रभावित करता है और बदलाव के उपायों पर कार्यशाला में मंथन होगा। वीरवार और शुक्रवार दो दिन तक चलने वाली कार्यशाला में दिल्ली, देहरादून, पालमपुर, सोलन, शिमला, प्रदेश विश्वविद्यालय, कुल्लू के विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिक अपना वक्तव्य रखेंगे। सुबह 11 बजे शुरू होने वाले कार्यक्रम का शुभारंभ हिमाचल वन अनुसंधान केंद्र पंथाघाटी के निदेशक डॉ. वी.आर.आर. सिंह करेंगे। इसके अलावा कार्यशाला में वन अधिकार अधिनियम, पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत वन संरक्षण, सोलर एनर्जी के अलावा प्रदेश में ग्लोबल वार्मिंग के असर पर भी वैज्ञानिक अपनी बात रखेंगे।